डॉ. राजकुमारी दास

असम

क्षमता

सबने ग्यान दिया
साधारण रहो
लेकिन जीवन ने
अनुभव दिया
साधारण का
समाज ने सदैव ही
तिरस्कार
किया
बल बुद्धि विद्या
भले ही
अपना हो
लेकिन प्रभाव
क्षमता का ही हो
महान लोगो का
विचार महान
लेकिन आज
'कुछ नही' समान

ग्यानी जहा है वहा
है
ग्यान का
आदर
जो सबकुछ
चापलूसी करके
पाता
वह भला
किसी को कैसे
आगे जाने देता
आगे बढ़ो ले कर
एक ही आसरा
शक्ति और धैर्य
मनुष्य क्षमता के
ऊपर भी कोई है
यह मत भूलो

पहला आमन्त्रण

दो -एक कविता
लिखी
पढ़कर प्रियजनों ने

बधाई दी
एक जन ने कहा
इस बार
हिंदी - दिवस पर
आप हो
हमारे विशेष कवि
सुनकर खुश तो
बहुत हुई
परन्तु मेरी बेबसी
मुझे ही पता है
कैसे छुपाई
कवि वह महान
व्यक्ति
जो करे हर भाव
विचार

की अभिव्यक्ति
मेरी कहाँ इनमें
गिनती ?
विश्वास ही नहीं हुआ
जो पढ़ाना और
पढ़ाना
सदेव ही कठिन लगा
उसी ने मुझे
आज कवि बनाया
किसी ने कहा
है आगे बढ़ना
तो
'कम्फर्टबल जोन' को
है त्यागना
ठीक है पहल कर
देती हूं
'सहित्य- रत्न' का
आमंत्रण
स्वीकार कर लेती हूं

 ISSN:2583-8849